अभिज्ञानशाकुन्तलम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास प्रणीत विश्व विख्यात नाटक है। इस नाटक की कथा महाभारत के आदिपर्व से ली गई है। इस नाटक में राजा दुष्यन्त तथा शकुन्तला के प्रणय, विवाह, विरह, प्रत्याख्यान तथा पुनर्मिलन की कहानी को कविकुलगुरु कालिदास ने बड़ी ही सुन्दरता से प्रस्तुत किया है। इस नाटक को सात अंकों में विभाजित किया गया है। ऋषि कण्व के द्वारा दिया गया एक पिता का पुत्री को उपदेश आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना आज से हजारों वर्ष पूर्व था। भारतीय आलोचकों ने 'काव्येषु नाटक रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला' कहकर इस नाटक की प्रशंसा की है। कालिदास संस्कृत भाषा के महान् कवि और नाटककार थे। उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूलतत्त्व निरूपित हैं। वह देश की धरती से गहरे अनुराग को पूरी संवेदना के साथ व्यक्त करते हैं। कालिदास अपनी अलंकार युक्त सुन्दर सरल और मधुर भाषा के लिए विशेष रूप से जाने जाते हैं। कालिदास के साहित्य का प्रमुख अंग संगीत रहा है और रस का सृजन करने में उनकी कोई उपमा नही। उन्होंने अपने शृंगार रस प्रधान साहित्य में भी साहित्यिक सौन्दर्य के साथ–साथ आदर्शवादी परम्परा और नैतिक मूल्यों का विशेष ध्यान रखा है। अभिज्ञानशाकुन्तलम कालिदास की दूसरी रचना है। जो उनकी जगत् में प्रसिद्धि का कारण मुख्य रूप से बना। इस नाटक का अनुवाद अंग्रेजी और जर्मन भाषा के अलावा भी विश्व की अनेक भाषाओं में हो चुका है।

इस नाटक में कालिदास ने राजा दुष्यन्त की कहानी को प्रस्तुत किया है जो वन में परित्यक्त ऋषि पुत्री शकुन्तला को प्रेम करने लगता है। दोनों जंगल में गन्धर्व विवाह कर लेते हैं। राजा दुष्यन्त अपनी राजधानी लौट आते हैं। शकुन्तला दुष्यन्त के ख्यालों में दिन–रात खोई रहती है। ऋषि दुर्वासा शकुन्तला को श्राप देते हैं कि जिसके वियोग में उसने ऋषि का अपमान किया है, वही उसे भूल जाएगा। काफी क्षमा प्रार्थना के बाद ऋषि ने शाप को नरम करते हुए कहा कि राजा की अंगूठी उन्हें दिखाते ही राजा को सब कुछ याद आ जाएगा। लेकिन राजधानी जाते हुए रास्ते में वह अंगूठी खो जाती है। स्थिति

तब और गम्भीर हो जाती है जब शकुन्तला को पता लगता है कि वह गर्भवती है। शकुन्तला लाख प्रयत्न करती रही परन्तु ऋषि के शापवश राजा ने उसे पहचानने से इन्कार कर दिया। जब एक मछुयारे ने वह अंगूठी दिखाई तो राजा को सब कुछ याद आ गया। राजा ने शकुन्तला को अपना लिया। यही अभिज्ञान शाकुन्तलम् की संक्षिप्त कहानी है। अभिज्ञान–शाकुन्तलम् श्रृंगार रस से भरे सुन्दर काव्यों में एक अनुपम नाटक है तभी एक उक्ति बड़ी प्रसिद्ध है –'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला' अर्थात् कविता के अनेक रूपों में सबसे सुन्दर नाटक है और नाटकों में सबसे सुन्दर शकुन्तला है।

कालिदास की अपनी यह बहुत बड़ी विशेषता है कि वह अपनी विषय–वस्तु देश की सांस्कृतिक विरासत से लेते हैं और उसे वे अपने उद्देश्य की प्राप्ति के अनुरूप ढाल भी लेते हैं। अभिज्ञान–शाकुन्तलम् की कथा में भी शकुन्तला चतुर सांसारिक युवा–नारी के रूप में चित्रित की गई है। इस नाटक में तपोवन की कन्या में प्रेमभावना के प्रथम प्रस्फुटन से लेकर वियोग, कुण्ठा आदि की अवस्थाओं में से होकर उसे उसकी समग्रता तक दिखाना चाहता है। उन्हीं के शब्दों में नाटक में जीवन की विविधता होनी चाहिए और उसमें विभिन्न रूचियों के व्यक्तियों के लिए सौन्दर्य और माधुर्य भी होना चाहिए।

कालिदास की यह विशेषता है कि जो बात यह महान् कलाकार अपनी लेखनी के स्पर्श से कह जाता है, अन्य अपने विराट वर्णन के उपरान्त भी नहीं कह पाते। अन्य शब्दों में अधिक भाव प्रकट कर देने और कथन की स्वाभाविकता के लिए कालिदास प्रसिद्ध है। उनकी उक्तियों में ध्वनि और अर्थ का साम्य मिलता है। उनके शब्द–चित्र सौन्दयमय और सर्वांगीण सम्पूर्ण हैं। उनकी प्रशसा करते हुए जर्मन कवि गेटे ने कहा था–'यदि तुम युवावस्था के फूल प्रौढ़ावस्था के फल और अन्य ऐसी सामग्रियां एक ही स्थान पर खोजना चाहते हो जिनसे आत्मा प्रभावित होता है, तृप्त होता है और शान्ति पाता है अर्थात् यदि तुम स्वर्ग और मर्त्य लोक को एक ही स्थान पर देखना चाहते हो तो मेरे मुख से सहसा एक ही नाम निकल पड़ता है – 'शकुन्तला' महान् कवि कालिदास की अमर रचना। जहां तक काव्य–सौन्दर्य की बात

की जाए तो इस दृष्टि से भी अभिज्ञान–शाकुन्तलम् का चौथा अंक और उस अंक का भी चौथा श्लोक बहुत ही रमणीय है। एक अन्य विद्वान ने कालिदास की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए कहा है–

''कालिदासगिरां सारं कालिदास सरस्वती

ततुर्मुखोऽथक ब्रह्मा विदुर्नान्ये तु मादृशः''

अर्थात् कालिदास की वाणी के सार को आज तक केवल तक केवल तीन व्यक्तियों ने समझा है, एक तो विधाता ने, दूसर वाग्देवी सरस्वती ने और तीसरे स्वयं कालिदास ने। मुझ जैसा तो उनको ठीक से समझने में असमर्थ है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि इस नाटक का कोई भी पात्र, कोई भी कथोपकथन, कोई भी घटना, कोई भी प्राकृतिक दृश्य निष्प्रयोजन नहीं। सभी घटनाएं यह दृश्य आने वाली घटनाओं का संकेत चमत्कारिक रीति से पहले ही दे देते हैं। जब दुष्यन्त धनुष पर बाण चढ़ाए हरिण के पीछे दौड़ते जा रहे हैं, तभी कुछ तपस्वी आकर रोकते हैं। कहते हैं – महाराज यह आश्रम का हरिण है, इस पर तीर न चलाना। यहां हरिण के अतिरिक्त शकुन्तला की ओर भी संकेत है, जो हरिण के समान ही भोली–भाली है।

इस नाटक में नाटकीयता के साथ–साथ काव्य का अंश की यथेष्ट मात्रा में विद्यमान है। इसमें मुख्य रस शृंगार है और शृगार के भी दोनों पक्षों संयोग–वियोग का चित्रण अत्यधिक सुन्दरता से किया गया है। इसके अतिरिक्त हास्य, वीर तथा करुण रस की अभिव्यक्ति भी यहां–वहां नाटक में दिखाई देती है। सारे नाटक में कालिदास ने अपनी उपमाओं और उत्प्रेक्षाओं का उपयोग कहों भी केवल अलंकार–प्रदर्शन के लिए नहीं किया। प्रत्येक स्थान पर उपमाओं और उत्प्रेक्षाओं का प्रयोग अपनी अभिव्यक्ति को रसपूर्ण बनाने में किया गया है। कालिदास को उपमा का सम्राट कहा जाता है। शाकुन्तला में भी उनका उपयुक्त उपमा चुनने की शक्ति भली–भांति प्रकट हुई है। शकुन्तला के विषय में एक जगह राजा दुष्यन्त कहते हैं – 'वह ऐसा फूल है जिसे किसी ने सूंघा नहीं, ऐसा नवपल्लव है जिस पर किसी

के नखों की खरोंच नहीं लगी, ऐसा रत्न है जिसमें छेद नहीं किया गया और ऐसा मधु है जिसका स्वाद किसी ने चखा नहीं है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कालिदास संस्कृत भाषा के महान् कवि और नाटककार थे। जिन्होंने कई अद्भुत काव्य और नाटक लिखकर संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया।